“संजीव के कथा साहित्य मे चित्रित सामाजिक परिवेश”

- भूमिका
- अनुसंधानः कार्य हेतु एवं उद्देश
- अनुसंधानःपूर्वानुमान
- अनुसंधानः कार्य उपयोगिता
- अनुसंधानः कार्य पध्दतियाँ
- अनुसंधानः सीमाएँ
- अनुसंधानः रुप-रेखा

प्रथम अध्याय : सामाजिक परिवेशः सैध्दांतिक अध्ययन

द्वितीय अध्याय : समकालीन रचनाकार और संजीव

तृतीय अध्याय : संजीव व्यक्तित्व और कृतित्व

चतुर्थ अध्याय : संजीव के कथासाहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश

अ) संजीव के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक परिवेश

ब) संजीव की कहानियों में चित्रित सामाजिक परिवेश

पंचम अध्याय : संजीव के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश

षष्ठम अध्याय : उपसंहार और निष्कर्ष

संदर्भ ग्रथं : सूची

भूमिका :

साहित्य समाज का दर्पण होता है समाज में घटीत घटनाओं का, बदलाव का, मूल्यों का प्रतिबिंब परिवेश बनकर साहित्य में छलकता है। परिणाम स्वरुप ही हमें समाज व्यवस्था के यथार्थ स्वरुप का ज्ञान होने लगता है। सामाजिक स्थान, सामाजिक दर्जा, सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक परिस्थिति, सामाजिक वर्ग संघर्ष आदि आयामों का साहित्य में चित्रण होना हैं। साहित्य ऐसी सामाजिक बातों को उजागर करता है। जिसके कारण हमें सामाजिक बूराईयों का पता चलकर हम सामाजिक विषमताओं को भूलाकर एक सुंदर समाज की निर्मिती करणे की प्रेरणा लेते है। हिंदी कथा साहित्य सामाजिक प्रेरणा देने वाला साहित्य है।

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद के बाद से चली आ रही सामाजिक सरोकारों की पंरपरा को पिछले कुछ दशकों में जिन साहित्यकारों ने प्रमुखता से संवर्धन किया है। संजीव उनमें अग्रगण्य हैं। बिना किसी शोर अथवा नाद-विवाद के अपनी रचनात्मक उपस्थिती से उन्होंने वर्तमान हिंदी साहित्य को खास गरिमा, गतिशीलता और प्रतिष्ठा प्रदान की है। बीसवीं सदीं के उत्तरार्ध में और इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक से आज तक संजीव हिंदी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर बने हैं। वे अपने साहित्य में समकालीन सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रणा बयान करते है। दलित समाज, आदिवासी समाज, मजदूर और किसान जैसे निम्नवर्ग और नारी जीवन का परिवेश उनके साहित्य का केंद्र रहा है। इन उपर्युक्त उपेक्षित समाज का परिवेश संजीव अपने साहित्य में बुनियादी तथ्यों के आधार पर चित्रित करते है. संजीव ने अबतक बारह उपन्यास और लगभग १५० कहानियाँ लिखी हैं। हाल ही में प्रकाशित हुए फॉस उपन्यास पढने पर मुझे इन बातों का अहसास हुआ है। उपन्यास पढते समय मुझे प्रेमचंद के गोदान उपन्यास की याद बार-बार आ रही

थी। कृषक जीवन के यथार्थ परिवेश ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया है। और साथ ही किसानों के भीषण शोषण ने चिंतित भी किया है । संजीव का साहित्य उपेक्षित समाज को प्रेरणा देने वाला साहित्य है। ऐसे साहित्य का अध्ययन करना मेरे लिए गर्व की बात है। गुरुवर्य और शोध मार्गदर्शक डॉ. जहीरुद्दीन पठान जी के मार्गदर्शन के कारण ही इस चुनौति पूर्ण विषय पर संशोधन करने के लिए तैयार हुआ हूँ। संजीव के कथा साहित्य में सामाजिक परिवेश को देखते हुए शोध कार्य करने हेतु मैंने अपने शोध का **"शीर्षक संजीव के कथा साहित्य मे चित्रित सामाजिक परिवेश"** दिया है। शोध शीर्षक की सीमा ध्यान में रखते हुए, प्रस्तुंत अनुसंधान षष्ठम्: अध्यायों में विभाजित करके शोध कार्य किया जाएगा।

अनुसंधान कार्य का हेतु एवं उद्देश : -

अनुसंधान कार्य को एक निश्चित दिशा देकर ही उससे वस्तुनिष्ठ जानकारी प्राप्त करने के लिए अनुसंधान कार्य के हेतु एवं उद्देश की आवश्यकता होती है। प्राप्त अनुसंधान कार्य करने के पीछे भी सकारात्मक हेतु एवं उद्देश है। वह निम्नांकित है।

१. सामाजिक परिवेश की अवधारणा का अध्ययन करना ।

२. संजीव के समकालीन परिवेश का अध्ययन करना।

३. क्या संजीव सामाजिक परिवेश को जान पाए ? क्या वे सामाजिक विषमता को महसूस कर पाए? क्या वे अपने समकालीन सामाजिक परिवेश को वर्तमान काल के साथ जोड पाए? ऐसे कई प्रश्नें को जानना है।

४. एक सुंदर समाज के लिए संजीव किन प्रचलित मान्यताओं का विरोध औरकिन मान्यताओं का समर्थन कर रहे है।

५. संजीव के कथा साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज के परिवेश का अध्ययन करना।

६. संजीव के कथा साहित्य के माध्यम से दलित, आदिवासी, मजदूर, किसान और स्त्री जैसी उपेक्षित वर्गो का अध्ययन सामाजिक परिवेश के आधार पर करना।

७. संजीव के साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश के यथार्थ को जानना।

अनुसंधन कार्य का पूर्वानुमान :-

किसी भी विषय पर अनुसंधान कार्य करने से पूर्व उस अनुसंधान कार्य के पूर्वानुमान या कामचलाऊ निष्कर्ष प्रतिपादित किया जाता है। जिससे अनुसंधान को एक निश्चित दिशा प्राप्त होती है, इस कारण संशोधन कार्य सफलता की और बढता है। प्रस्तुत शोध कार्य के लिए उपर्युक्त ऐसे कार्यवाहक पूर्वानुमान निर्धारित किए है। वह निम्नांकित है।

१. मानवीय समाज के इतिहास में सामाजिक परिवेश का अस्थित्व होता है।

२. साहित्य समाज का दर्पण होता है।

३. सामाजिक परिवेश ही लेखक को लेखन की प्रेरणा देता है।

४. संजीव का कथा- साहित्य सामाजिक परिवेश और सामाजिक यथार्थ पर आधारित है।

५. संजीव का साहित्य सामाजिक सरोकारों से जुडा है।

६. संजीव का लेखन साहित्य उनके समय और वर्तमान समाज का प्रासंगिक आख्यान है।

७. संजीव का साहित्य सामाजिक शोषक और शोषित प्रवृति के माध्यम से सामाजिक बदलाव की नई सोच और नये मूल्य देते है।

८. संजीव सामाजिक न्याय, समता, बंधूता और स्वातंत्र्य जैसे समतावादी मूल्यों के पक्षधर है।

अनुसंधान कार्य की उपयोगीता :

- इक्कीसवीं सदी के सजग रचनाकार के रुप में संजीव की वर्तमान समाज को पहचान होगी।
- साहित्य समाज का दर्पण होता है। ऐसे साहित्यिक मान्यता का यथार्थ परिचय होगा।
- सामाजिक सुधार और सामाजिक परिवर्तन के लिए नयी दिशा और सोच मिलेगी।

  संजीव ने अपने साहित्य में सामाजिक परिवेश के कौन-कौन से आयामों का परिचय दिया है, इसकी पहचान होगी।
- प्रस्तृत शोध के माध्यम से वर्तमान युवाओं को सामाजिक परिवेश को सुधारने की प्रेरणा मिलेगी।

अनुसंधान कार्य पध्दतियाँ :-

किसी भी विषय के अनुसंधान कार्य करते समय अनुसंधान की पध्दातियों को अपनाया जाता है। इसीलिए प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में निम्नांकित शोध पध्दतियों का प्रयोग किया जायेगा।

१.आलोचनात्मक शोध पध्दती।

२. मननात्मक शोध पध्दती।

३. तुलनात्मक शोध पध्दती।

४. व्याख्यात्मक शोध पध्दती।

अनुसंधान की सीमाएँ :-

हर संशोधन की कुछ सीमाएँ होती हैं। उसी सीमा में रहकर ही शोधार्थी को अपने संशोधन को पूर्ण करना पडता है। प्रस्तुत संशोधन की भी अपनी सीमाएँ है।

१. प्रस्तृत संशोधन केवल सामाजिक परिवेश को आधार मानकर ही पूरा किया जायगा।

२. संजीव के उपन्यास और कहानियों का ही अध्ययन करना है।

३. संजीव के साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश की तुलना वर्तमान सामाजिक परिवेश के साथ करकर प्रासंगिकता का अध्ययन करना है।

४. संजीव के समकालीन रचनाकारों का अध्ययन करना है।

५. संजीव के साहित्य का केवल सामाजिक परिवेश के आधार पर संशोधन करना है।

- **संशोधन की रुपरेखा : -**

“संजीव के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश”

प्रथम अध्याय : सामाजिक परिवेश : एक परिचय

प्रस्तुत अनुसंधान के प्रथम अध्याय में सामाजिक परिवेश का अर्थ अवधारणा स्वरुप और वर्गीकरण का विस्तार से अध्ययन किया जाएगा। जो अनुंसधान से संबंधित है।

द्वितीय अध्याय : समकालीन रचनाकार और संजीव

प्रस्तृत अध्याय के समकालीन रचनाकार की अवधारना को प्रस्तुत किया जायगा। और साथ ही समकालीन रचनाकार के साहित्यिक परंपराओं का

विस्तार से अध्ययन सामाजिक परिवेश के आधार पर किया जाएगा। ताकि सामाजिक परिवेश की दृष्टि से समकालीन रचनाकारों की परंपरा में संजीव के स्थान को देखा जा सके। और समकालीन काल परिवेश में संजीव के साहित्यिक स्थान और योगदान का अध्ययन किया जायगा।

तृतीय अध्याय : संजीव का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रस्तुत अध्याय में संजीव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दो चरणों में विभाजित किया जायेगा। प्रथम चरण के अंतर्गत उनका जन्म माता-पिता और परिवारजण, बचपन, शिक्षा, विवाह, नौकरी आदी बातों का अध्ययन विस्तार से किया जायगा। तो दूसरे चरण के अंतर्गत उनके उपन्यासों, कहानियों का विस्तार से साहित्यिक परिचय दिया जायेगा।

संजीव का जन्म ६ जुलाई १९४७ को बॉगर कला, सुल्तानपुर (उ.प.) में एक दलित परिवार में हुआ है। उन्होंने लगभग बारह उपन्यास और १५० के ऊपर कहानियाँ लिखी है। सर्कस (१९८४), सावधान नीचे आग है (१९८६), धार (१९९०) पांव तले की दूब (१९९५) जंगल जहाँ शुरु होता है (२०००), सूत्रधार (२०००), फॉस (२०१५) आदि उपन्यास है तो कहानी संग्रहों में संजीव की कथा यात्रा, पहला पडाव, संजीव की कथा यात्रा, दूसरा पडाव और संजीव की कथा यात्रा, तीसरा पडाव है।

चतुर्थ अध्याय : संजीव के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश

प्रस्तुत अध्याय संशोधन की दृष्टि से दो चरणों मे विभाजित किया है। प्रथम चरण का शीर्षक संजीव के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक परिवेश तो दुसरे चरण का शीर्षक **“संजीव के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश”** है। दोनों चरणों में सांमाजिक परिवेश के विविधा आयामों द्वारा विस्तार से आलोचना की जायेगी।

पंचम अध्याय : संजीव के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक परिवेश की प्रासंगिकता

पंचम अध्याय में सर्व प्रथम प्रासंगिकता की अवधारणा को स्पष्ट किया जायोगा आौर संजीव के साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक परिवेश की वर्तमान सामाजिक परिवेश के साथ तुलना करके उसकी प्रासंगिकता का यथार्थ अध्ययन किया जाऐगा।

षष्ठम अध्याय : उपसंहार और निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के अंतीम अध्याय में उपसंहार के रुप में पूरे शोध प्रबंध का सार प्रस्तुत किया जायेगा। और अनुसंधान करते समय आए हुए अनुभव के आधार पर निष्कर्ष दिए जाऐंगे। जो प्रस्तुत शोध प्रबंध की उपलब्धि होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. सूत्रधार - संजीव राधाकृष्ण पेपरबॉक्स,
प्रकाशन नई दिल्ली सन -२०१०

२. जंगल जहाँ शुरु होता है - संजीव

३. आकाश चम्पा - संजीव

४. धार - संजीव

५. फॉस - संजीव

६. अहेर - संजीव

७. सर्कस - संजीव

८. सावधान नीचे आग है - संजीव

९. संजीव की कथा यात्रा, पहला पडाव

१०. संजीव की कथा यात्रा, दूसरा पडाव

११. संजीव की कथा यात्रा, तिसरा पडाव

१२. भारतीय सामाजिक अवस्था

१३. प्रमुख समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ

१४. प्राचिन भारत में प्रगति एवं रुढि

१५. भारतीय सामाजिक समस्याएँ

शोध निर्देशक

प्रा.डॉ. जहीरुद्दीन पठान

हिंदी विभाग अध्यक्ष,

कै.बाबासाहेब देशमुख गोरठेकर

महाविद्यालय उमरी जि.नांदेड

शोधकर्ता

प्रा. वाघमारे सुधाकर

लाल बहादुर शास्त्री

महाविद्यालय, धर्माबाद

जि. नांदेड - ४३१८०९